

श्री श्रीगुरुवष्टक in Hindi

संसार - दावानल - लीढ - लोक - त्राणाय कारुण्य - घनाघनत्वम् ।
प्राप्तस्य कल्याण - गुणार्णवस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ 1

महाप्रभोः कीर्तन - नृत्य - गीत - वादित्र - माद्यन् - मनसो रसेन ।
रोमांच - कम्पाश्रु - तरंग - भाजो वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ 2

श्री - विग्रहाराधन - नित्य - नाना - श्रृंगार - तन् - मन्दिर - मार्जनादौ ।
युक्तस्य भक्तांश्च नियुजतोऽपि वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ 3

चतुर्विध - श्रीभगवत् - प्रसाद - स्वाद्वन्न तृप्तान् हरि - भक्त - संधान ।
कृत्वैव तृप्तिं भजतः सदैव वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ 4

श्रीराधिका - माधवयोरपार - माधुर्य - लीला - गुण - रूप - नाम्नाम् ।
प्रतिक्षणास्वादन - लोलुपस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ 5

निकुंज - यूनो रति - केलि - सिद्धयै या यालिभिर् युक्तिर् अपेक्षणीया ।
तत्राति - दक्ष्याद् अति - वल्लभस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ 6

साक्षाद् - धरित्वेन समस्त शास्त्रर् उक्तस् तथा भाव्यत एवं सद्भिः ।
किन्तु प्रभोर् यः प्रिय एवं तस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ 7

यस्य प्रसादाद् भगवत् प्रसादो यस्या प्रसादान् न गातिः कुतोऽपि ।
ध्यायन् स्तुवंस् तस्य यशस् त्रि - सन्ध्यं वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥ 8
- श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर रचित

Sri Sri Guruvastak in English

*samsara-davanala-lidha-lokatranaya
karunya-ghanaghanatvam
praptasya kalyana-gunarnavasya
vande guroh sri-charanaravindam*

***mahaprabhoh kirtana-nritya-gitavaditra-
madyan-manaso rasena
romanacha-kampashru-taranga-bhajo
vande guroh sri-charanaravindam***

***sri-vigraharadhana-nitya-nanashringara-
tan-mandira-marjanadau
yuktasya bhaktams cha niyunjato pi
vande guroh sri-charanaravindam***

***chatur-vidha-sri-bhagavat-prasadasvadv-
anna-triptan hari-bhakta-sanghan
kritvaiva triptim bhajatah sadaiva
vande guroh sri-charanaravindam***

***sri-radhika-madhavayor aparamadhurya-
lila guna-rupa-namnam
prati-kshanasvadana-lolupasya
vande guroh sri-charanaravindam***

***nikunja-yuno rati-keli-siddhyai
ya yalibhir yuktir apekshaniya
tatrati-dakshyad ati-vallabhasya
vande guroh sri-charanaravindam***

***sakshad-dharitvena samasta-shastrair
uktas tatha bhavyata eva sadbhih
kintu prabhor yah priya eva tasya
vande guroh sri-charanaravindam***

***yasya prasadam bhagavat-prasado
yasyaprasadan na gatih kuto pi
dhyayan stuvams tasya yashas tri-sandhyam
vande guroh sri-charanaravindam***

